सत्ता के समकालीन केंद्र

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» वैकल्पिक शक्ति केंद्रों का उदय

प्रश्न 1 (आसान). 1990 के दशक में किस महाशक्ति का विघटन हुआ?
उत्तर – सोवियत संघ

प्रश्न 2 (आसान). सोवियत संघ के विघटन के बाद कौन सा देश एकमात्र महाशक्ति के रूप में उभरा?
उत्तर – अमेरिका

प्रश्न 3 (मध्यम). वैकल्पिक शक्ति केंद्रों का उदय क्यों ज़रूरी हुआ?
उत्तर – अमेरिका के बढ़ते प्रभुत्व को सीमित करने और विश्व में शक्ति संतुलन बनाए रखने के लिए।

प्रश्न 4 (कठिन). यूरोपीय संघ और आसियान जैसे क्षेत्रीय संगठनों ने वैकल्पिक शक्ति केंद्र के रूप में कैसे भूमिका निभाई?
उत्तर – उन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में आर्थिक एकीकरण, शांति और सहयोग को बढ़ावा दिया, जिससे वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मज़बूत होकर उभरे और अमेरिका के प्रभुत्व को चुनौती दे सके।

» यूरोपीय संघ का गठन और विकास

प्रश्न 5 (आसान). यूरोपीय संघ की स्थापना के पीछे मुख्य कारण क्या था?
उत्तर – द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप में शांति, आर्थिक सहयोग और राजनीतिक स्थिरता लाना.

प्रश्न 6 (आसान). यूरोपीय संघ की साझी मुद्रा का नाम क्या है?
उत्तर – यूरो (Euro)

प्रश्न 7 (मध्यम). मास्ट्रिस्ट संधि का यूरोपीय संघ के गठन में क्या महत्व था?
उत्तर – मास्ट्रिस्ट संधि (1992) ने औपचारिक रूप से यूरोपीय संघ की स्थापना की और आर्थिक सहयोग से बढ़कर इसे एक राजनीतिक इकाई का रूप दिया, जिसमें साझा विदेश और सुरक्षा नीति भी शामिल थी.

प्रश्न 8 (कठिन). यूरोपीय संघ को एक 'विशाल राष्ट्र-राज्य' की तरह क्यों कहा जाता है, जबकि यह एक राष्ट्र नहीं है?
उत्तर – यूरोपीय संघ एक राष्ट्र नहीं है, लेकिन इसके पास अपना झंडा, गान, स्थापना-दिवस, साझा मुद्रा (यूरो) और काफी हद तक साझा विदेश व सुरक्षा नीति है. यह अपने सदस्य देशों से ऊपर जाकर कई मामलों में फैसले लेता है, जिससे यह एक विशाल राष्ट्र-राज्य जैसा दिखता है, भले ही इसके सदस्य देशों की अपनी संप्रभुता बनी रहे.

» यूरोपीय संघ की प्रमुख विशेषताएँ और प्रभाव

प्रश्न 9 (आसान). यूरोपीय संघ की कौन सी मुद्रा अमेरिकी डॉलर को चुनौती दे रही है?
उत्तर – यूरो

प्रश्न 10 (आसान). सैन्य शक्ति के मामले में यूरोपीय संघ की सेना दुनिया में कौन से स्थान पर आती है?
उत्तर – दूसरे स्थान पर

प्रश्न 11 (मध्यम). यूरोपीय संघ की कूटनीतिक शक्ति का एक उदाहरण दीजिए जब उसने चीन जैसे देश से बात की हो।
उत्तर – चीन के साथ मानवाधिकारों के उल्लंघन और पर्यावरण विनाश जैसे मामलों पर यूरोपीय संघ ने सीधे धमकी या सैन्य शक्ति के बजाय कूटनीति, आर्थिक निवेश और बातचीत की नीति अपनाई, जो बहुत प्रभावी साबित हुई।

प्रश्न 12 (कठिन). इराक युद्ध के दौरान यूरोपीय संघ के सदस्य देशों की नीतियों में क्या विरोधाभास दिखा और इससे यूरोपीय संघ की क्षमता कैसे प्रभावित हुई?
उत्तर – इराक युद्ध में ब्रिटेन अमेरिका के साथ था, जबकि जर्मनी और फ्रांस इसके खिलाफ थे। यह दिखाता है कि सदस्य देशों की अपनी स्वतंत्र विदेश और रक्षा नीतियां हो सकती हैं, जो कई बार एक-दूसरे से भिन्न होती हैं। इससे विदेशी और रक्षा मामलों में यूरोपीय संघ की एक साझा नीति बनाने और उस पर अमल करने की क्षमता सीमित हो जाती है।

» यूरोपीय एकता के महत्वपूर्ण पड़ाव

प्रश्न 13 (आसान). यूरोपीय कोयला और इस्पात समुदाय का गठन किस वर्ष हुआ था?
उत्तर – अप्रैल 1951

प्रश्न 14 (आसान). यूरो मुद्रा को कितने सदस्य देशों ने सबसे पहले अपनाया था?
उत्तर – 12 सदस्य देशों ने

प्रश्न 15 (मध्यम). शांगेन संधि का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – यूरोपीय आर्थिक समुदाय के देशों के बीच सीमा नियंत्रण समाप्त करना।

प्रश्न 16 (कठिन). जर्मनी का एकीकरण यूरोपीय संघ के विकास में किस तरह एक महत्वपूर्ण घटना थी?
उत्तर – जर्मनी के एकीकरण (अक्टूबर 1990) से यूरोपीय संघ की शक्ति और प्रभाव और बढ़ गया, क्योंकि एक बड़ा और मजबूत जर्मनी यूरोपीय संघ का एक महत्वपूर्ण सदस्य है। इसने यूरोपीय एकीकरण की भावना को भी मजबूत किया।

» आसियान (दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों का संगठन) का परिचय

प्रश्न 17 (आसान). आसियान का पूरा नाम क्या है?
उत्तर – दक्षिण पूर्व एशियाई राष्ट्रों का संगठन।

प्रश्न 18 (आसान). आसियान की स्थापना किस घोषणा से हुई थी?
उत्तर – बैंकॉक घोषणा।

प्रश्न 19 (मध्यम). आसियान की स्थापना के पीछे मुख्य कारण क्या थे?
उत्तर – उपनिवेशवाद से मुक्ति के बाद राष्ट्र-निर्माण, आर्थिक पिछड़ापन, गरीबी और शीत युद्ध के दौरान महाशक्तियों के दबाव से निपटना।

प्रश्न 20 (कठिन). यूरोपीय संघ और आसियान के गठन के पीछे क्या प्रमुख अंतर हैं?
उत्तर – यूरोपीय संघ एक अधिराष्ट्रीय संगठन बनने की दिशा में बढ़ा, जिसमें कुछ मामलों में सदस्य देशों को अपनी संप्रभुता छोड़नी पड़ी। आसियान का जोर 'आसियान शैली' पर है, जिसमें अनौपचारिक सहयोग, टकरावरहित मेल-मिलाप और राष्ट्रीय संप्रभुता का सम्मान प्रमुख है।

» आसियान की कार्यशैली और विकास

प्रश्न 21 (आसान). आसियान की कार्यशैली को किस नाम से जाना जाता है?
उत्तर – आसियान शैली

प्रश्न 22 (आसान). आसियान के मुख्य तीन समुदाय कौन से हैं?
उत्तर – सुरक्षा, आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक

प्रश्न 23 (मध्यम). आसियान शैली की दो मुख्य विशेषताएँ बताएँ।
उत्तर – अनौपचारिक और सहयोगात्मक।

प्रश्न 24 (कठिन). यूरोपीय संघ की तुलना में आसियान की कार्यशैली में क्या मुख्य अंतर है?
उत्तर – आसियान राष्ट्रीय संप्रभुता का सम्मान करता है और अधिराष्ट्रीय संगठन बनने का लक्ष्य नहीं रखता, जबकि यूरोपीय संघ ने खुद को एक अधिराष्ट्रीय संगठन के रूप में विकसित किया है।

» आसियान का प्रभाव और भारत के साथ संबंध

प्रश्न 25 (आसान). भारत ने किस वर्ष 'लुक ईस्ट' नीति अपनाई?
उत्तर – 1991 में

प्रश्न 26 (आसान). 'एक्ट ईस्ट' नीति किस नीति का अगला चरण है?
उत्तर – 'लुक ईस्ट' नीति का

प्रश्न 27 (मध्यम). भारत और आसियान के बीच मुक्त व्यापार क्षेत्र व्यवस्था कब लागू हुई?
उत्तर – 2010 में

प्रश्न 28 (कठिन). आसियान की असली ताकत क्या है जो उसे एशिया में एक अद्वितीय क्षेत्रीय संगठन बनाती है?
उत्तर – आसियान की असली ताकत अपने सदस्य देशों, सहभागी सदस्यों और बाकी गैर-क्षेत्रीय संगठनों के बीच निरंतर संवाद और परामर्श करने की नीति में है, और यह एशियाई देशों व विश्व शक्तियों को राजनैतिक और सुरक्षा मामलों पर चर्चा के लिए मंच उपलब्ध कराता है।

» चीनी अर्थव्यवस्था का प्रारंभिक उत्थान और चुनौतियाँ

प्रश्न 29 (आसान). चीन में साम्यवादी क्रांति किस वर्ष हुई थी?
उत्तर – 1949

प्रश्न 30 (आसान). शुरुआत में चीन ने किस देश की आर्थिक मॉडल का अनुसरण किया?
उत्तर – सोवियत संघ (USSR)

प्रश्न 31 (मध्यम). चीन की प्रारंभिक आर्थिक नीति को 'आर्थिक एकांतवास' क्यों कहा जाता है?
उत्तर – क्योंकि चीन ने बाहरी दुनिया से अपने आर्थिक संबंध और व्यापार लगभग खत्म कर दिए थे, खुद को अलग-थलग कर लिया था।

प्रश्न 32 (कठिन). सोवियत मॉडल पर आधारित अर्थव्यवस्था अपनाने से चीन को शुरुआती दौर में क्या प्रमुख आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा?
उत्तर – सोवियत मॉडल पर आधारित होने और 'आर्थिक एकांतवास' के कारण, चीन को धीमी आर्थिक वृद्धि, तकनीकी पिछड़ापन और संसाधनों का कुशल उपयोग न कर पाने जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

» चीन की आर्थिक सुधार और 'खुले द्वार की नीति'

प्रश्न 33 (आसान). चीन में 'खुले द्वार की नीति' किस वर्ष शुरू हुई?
उत्तर – 1978

प्रश्न 34 (आसान). 'खुले द्वार की नीति' किसने शुरू की थी?
उत्तर – देंग श्याओपेंग

प्रश्न 35 (मध्यम). चीन की 'खुले द्वार की नीति' के दो मुख्य आर्थिक सुधार बताइए।
उत्तर – कृषि और उद्योग का निजीकरण, विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZ) की स्थापना।

प्रश्न 36 (कठिन). यह नीति चीन को सोवियत मॉडल से किस प्रकार अलग करती थी?
उत्तर – यह नीति सोवियत मॉडल के केंद्रीकृत नियंत्रण और आत्मनिर्भरता के विपरीत, बाज़ार अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों और वैश्विक जुड़ाव पर केंद्रित थी, जिससे विदेशी निवेश और व्यापार को बढ़ावा मिला।

» चीन के आर्थिक उत्थान के परिणाम और प्रभाव

प्रश्न 37 (आसान). चीन के आर्थिक विकास का एक सकारात्मक परिणाम बताओ।
उत्तर – विदेशी निवेश में वृद्धि या व्यापार में बढ़ोतरी।

प्रश्न 38 (आसान). चीन के आर्थिक विकास का एक नकारात्मक परिणाम क्या था?
उत्तर – बेरोजगारी में वृद्धि या आय असमानता।

प्रश्न 39 (मध्यम). चीन की अर्थव्यवस्था में 'खुले द्वार की नीति' का सबसे बड़ा प्रभाव क्या था?
उत्तर – चीन विश्व व्यापार के लिए एक प्रमुख केंद्र बन गया और विदेशी मुद्रा भंडार में भारी वृद्धि हुई।

प्रश्न 40 (कठिन). वैश्विक स्तर पर चीन के बढ़ते आर्थिक प्रभाव ने अन्य देशों, जैसे जापान और अमेरिका, के साथ उसके संबंधों को कैसे प्रभावित किया है?
उत्तर – चीन की व्यापारिक शक्ति के कारण जापान, अमेरिका और अन्य आसियान देश व्यापारिक हितों को प्राथमिकता देते हुए चीन के साथ अपने अन्य विवादों को भुलाने लगे हैं, जिससे चीन का भू-राजनीतिक दबदबा बढ़ रहा है।

» भारत-चीन संबंध: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और वर्तमान स्थिति

प्रश्न 41 (आसान). भारत और चीन के बीच 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' का नारा किस दशक में लोकप्रिय हुआ था?
उत्तर – 1950 के दशक में।

प्रश्न 42 (आसान). 1962 का भारत-चीन युद्ध किन क्षेत्रों को लेकर हुआ था?
उत्तर – अरुणाचल प्रदेश के कुछ इलाकों और लद्दाख के अक्साई चिन क्षेत्र को लेकर।

प्रश्न 43 (मध्यम). शीत युद्ध की समाप्ति के बाद भारत और चीन के संबंधों में क्या महत्वपूर्ण बदलाव आया?
उत्तर – शीत युद्ध के बाद दोनों देशों के संबंध रणनीतिक के साथ-साथ आर्थिक रूप से भी मज़बूत हुए, व्यापार में भारी वृद्धि हुई और कई वैश्विक मंचों पर सहयोग भी बढ़ा।

प्रश्न 44 (कठिन). वर्तमान में भारत-चीन संबंधों में तनाव के मुख्य कारण क्या हैं, भले ही व्यापार बढ़ रहा हो?
उत्तर – वर्तमान में तनाव के मुख्य कारण सीमा विवाद, चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) और संयुक्त राष्ट्र में आतंकवाद विरोधी भारतीय प्रस्ताव के खिलाफ चीन द्वारा पाकिस्तान को समर्थन देना आदि हैं।

» जापान एक वैकल्पिक शक्ति केंद्र के रूप में

प्रश्न 45 (आसान). जापान ने विश्व युद्ध के बाद किस क्षेत्र पर सबसे ज्यादा ध्यान दिया?
उत्तर – आर्थिक विकास पर।

प्रश्न 46 (आसान). जापान की कौन सी चीज़ विश्व भर में प्रसिद्ध है?
उत्तर – उसकी उच्च प्रौद्योगिकी (technology)।

प्रश्न 47 (मध्यम). प्राकृतिक संसाधनों की कमी के बावजूद जापान एक आर्थिक शक्ति कैसे बना?
उत्तर – कम प्राकृतिक संसाधनों के बावजूद, जापान ने अपनी मानव पूंजी (human capital) और प्रौद्योगिकी पर निवेश करके उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद बनाए, जिससे वह विश्व बाज़ार में सफल हुआ।

प्रश्न 48 (कठिन). जापान के वैकल्पिक शक्ति केंद्र बनने में उसकी 'शांतिवादी नीति' ने कैसे मदद की?
उत्तर – जापान की शांतिवादी नीति (संविधान का अनुच्छेद 9) ने उसे अपनी सेना पर कम खर्च करने और उस धन को आर्थिक विकास, शिक्षा और प्रौद्योगिकी में लगाने की अनुमति दी, जिससे उसकी आर्थिक प्रगति तेज़ी से हुई और वह एक वैकल्पिक शक्ति केंद्र के रूप में उभरा।

» दक्षिण कोरिया एक वैकल्पिक शक्ति केंद्र के रूप में

प्रश्न 49 (आसान). दक्षिण कोरियाई अर्थव्यवस्था के तीव्र विकास को क्या कहा जाता है?
उत्तर – 'हान नदी पर चमत्कार'

प्रश्न 50 (आसान). दक्षिण कोरिया 1996 में किस अंतर्राष्ट्रीय संगठन का सदस्य बना?
उत्तर – OECD (आर्थिक सहयोग और विकास संगठन)

प्रश्न 51 (मध्यम). दक्षिण कोरिया के उच्च मानव विकास (Human Development) के पीछे कौन से प्रमुख कारक रहे हैं?
उत्तर – सफल भूमि सुधार, ग्रामीण विकास, व्यापक मानव संसाधन विकास, तीव्र और न्यायसंगत आर्थिक वृद्धि।

प्रश्न 52 (कठिन). दक्षिण कोरिया ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की अपनी चुनौतियों पर कैसे काबू पाया और एक वैकल्पिक शक्ति केंद्र के रूप में उभरा? विस्तार से बताएं।
उत्तर – द्वितीय विश्व युद्ध के बाद दक्षिण कोरिया एक गरीब और विभाजित देश था। लेकिन उसने निर्यात-उन्मुख नीतियों को अपनाया, मानव संसाधनों का विकास किया, मजबूत पुनर्वितरण नीतियों और प्रभावी संस्थानों के माध्यम से आर्थिक वृद्धि को न्यायसंगत बनाया। 'हान नदी पर चमत्कार' के दौरान उसने तीव्र आर्थिक विकास किया और आज सैमसंग, LG जैसी कंपनियों के साथ विश्व की 11वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और सैन्य खर्च में 10वें स्थान पर है, जो उसे एक मजबूत वैकल्पिक शक्ति केंद्र बनाता है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. दो-ध्रुवीय विश्व व्यवस्था के बाद, विश्व में शक्ति संतुलन में क्या बदलाव आया?

› पहला चरण: दो-ध्रुवीय व्यवस्था का अंत हुआ, जिसमें अमेरिका और सोवियत संघ प्रमुख थे।

› दूसरा चरण: सोवियत संघ के विघटन से अमेरिका विश्व की एकमात्र महाशक्ति बन गया।

› तीसरा चरण: विभिन्न क्षेत्रों में नए आर्थिक और राजनीतिक समूह (जैसे यूरोपीय संघ, आसियान) और देश (जैसे चीन) उभरे।

› चौथा चरण: ये नए समूह और देश मिलकर अमेरिका के प्रभुत्व को चुनौती देने लगे और एक बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर अग्रसर हुए।

उत्तर – दो-ध्रुवीय व्यवस्था के बाद, अमेरिका का प्रभुत्व बढ़ा, लेकिन साथ ही यूरोपीय संघ, आसियान और चीन जैसे वैकल्पिक शक्ति केंद्र उभरे, जिससे विश्व शक्ति संतुलन एकध्रुवीय से बहुध्रुवीय होने लगा।

उदाहरण 2. यूरोपीय संघ का गठन किस मुख्य संधि के तहत हुआ और यह शुरुआत में किस उद्देश्य से बनाया गया था?

› सबसे पहले हमें यह समझना होगा कि यूरोपीय संघ द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप में शांति और आर्थिक स्थिरता लाने की कोशिशों का नतीजा है.

› शुरुआत में, देशों ने कोयला और इस्पात जैसे संसाधनों पर मिलकर काम करने के लिए European Coal and Steel Community (ECSC) बनाई थी, ताकि युद्ध की संभावना कम हो.

› धीरे-धीरे, यह आर्थिक सहयोग बढ़ता गया और 1992 में 'मास्ट्रिस्ट संधि' (Maastricht Treaty) पर हस्ताक्षर किए गए.

› इसी संधि के तहत औपचारिक रूप से यूरोपीय संघ (European Union) की स्थापना हुई. इसका उद्देश्य केवल आर्थिक सहयोग से बढ़कर राजनीतिक, विदेश नीति और सुरक्षा के मामलों में भी एक-दूसरे का साथ देना था.

उत्तर – यूरोपीय संघ का गठन 'मास्ट्रिस्ट संधि' (Maastricht Treaty) के तहत हुआ था और शुरुआत में इसका उद्देश्य यूरोप में शांति और आर्थिक सहयोग स्थापित करना था, खासकर कोयला और इस्पात जैसे महत्वपूर्ण उद्योगों में एकीकरण के माध्यम से.

उदाहरण 3. यूरोपीय संघ की आर्थिक शक्ति के दो प्रमुख उदाहरण बताइए।

› पहला उदाहरण है इसकी सकल घरेलू उत्पाद (GDP) – जो अनुमानतः $19.35 ट्रिलियन डॉलर के करीब है। यह दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है।

› दूसरा उदाहरण है इसकी साझा मुद्रा 'यूरो'। यह डॉलर को कड़ी टक्कर देती है और विश्व व्यापार में इसकी हिस्सेदारी अमेरिका से भी तीन गुना ज्यादा है, जिससे इसे बातचीत में बहुत फायदा मिलता है।

उत्तर – यूरोपीय संघ की GDP का बहुत बड़ा होना और यूरो मुद्रा का मजबूत होना, इसकी आर्थिक शक्ति के प्रमुख उदाहरण हैं।

उदाहरण 4. यूरोपीय संघ के गठन में 'मास्ट्रिस्ट संधि' का क्या महत्व था और यह किस वर्ष हुई थी?

› हमें याद करना होगा कि यूरोपीय संघ का गठन किस मुख्य संधि के तहत हुआ।

› इतिहास में यूरोपीय एकता के पड़ावों को देखें।

› मास्ट्रिस्ट संधि वह महत्वपूर्ण पड़ाव थी जिसने औपचारिक रूप से 'यूरोपीय संघ' का गठन किया।

› यह संधि फरवरी 1992 में हुई थी।

उत्तर – मास्ट्रिस्ट संधि फरवरी 1992 में हुई थी और इसी संधि के तहत 'यूरोपीय संघ' (European Union) का औपचारिक गठन हुआ। इसने यूरोपीय आर्थिक समुदाय को एक बड़े राजनीतिक और आर्थिक संगठन में बदल दिया।

उदाहरण 5. आसियान की स्थापना किस वर्ष हुई और इसके पहले पांच सदस्य देश कौन से थे?

› पहला कदम: आसियान की स्थापना की तारीख याद करें।

› दूसरा कदम: बैंकॉक घोषणा के समय हस्ताक्षर करने वाले देशों को पहचानें।

› तीसरा कदम: इन देशों के नाम बताएं।

› समाधान: आसियान की स्थापना 1967 में हुई थी।

› समाधान: इसके पहले पांच सदस्य देश इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर और थाईलैंड थे।

उत्तर – आसियान की स्थापना 1967 में हुई थी, और इसके संस्थापक देश इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर, और थाईलैंड थे।

उदाहरण 6. आसियान ने अपने लक्ष्यों को पाने के लिए कौन से तीन मुख्य समुदाय बनाए?

› सबसे पहले, आसियान ने तय किया कि उन्हें अपने क्षेत्र में शांति और सुरक्षा बनाए रखनी है, ताकि कोई देश आपस में लड़े नहीं। इसके लिए उन्होंने 'आसियान सुरक्षा समुदाय' बनाया।

› दूसरा, देशों को मिलकर तरक्की करनी थी, आर्थिक रूप से मज़बूत होना था। इसलिए उन्होंने 'आसियान आर्थिक समुदाय' बनाया, ताकि व्यापार बढ़े और सब मिलकर तरक्की करें।

› तीसरा, इन देशों की संस्कृति, शिक्षा और समाज को भी आगे बढ़ाना था। इसके लिए 'आसियान सामाजिक-सांस्कृतिक समुदाय' बनाया गया, ताकि लोग एक-दूसरे से सीखें और मिलकर आगे बढ़ें।

उत्तर – आसियान ने अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए तीन मुख्य समुदाय बनाए: आसियान सुरक्षा समुदाय, आसियान आर्थिक समुदाय और आसियान सामाजिक-सांस्कृतिक समुदाय।

उदाहरण 7. भारत और आसियान के बीच व्यापारिक संबंधों को मजबूत करने में किस नीति और समझौते ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है? स्पष्ट करें।

› सबसे पहले, भारत ने 1991 में 'लुक ईस्ट' नीति अपनाई, जिसका उद्देश्य पूर्वी एशियाई देशों, जिसमें आसियान भी शामिल था, के साथ आर्थिक और रणनीतिक संबंध बढ़ाना था।

› इसके बाद, 2014 में 'लुक ईस्ट' नीति को 'एक्ट ईस्ट' नीति में बदल दिया गया, जिससे भारत ने इन संबंधों को और सक्रिय और गहरा करने पर ज़ोर दिया।

› व्यापारिक संबंधों को सीधे तौर पर मज़बूत करने के लिए, भारत और आसियान के बीच 2010 में 'मुक्त व्यापार क्षेत्र व्यवस्था' (FTA) लागू हुई, जिससे दोनों पक्षों के बीच वस्तुओं और सेवाओं का व्यापार आसान हो गया और टैरिफ कम हो गए।

› इन नीतियों और समझौतों के कारण भारत और आसियान के बीच व्यापार और निवेश में काफी वृद्धि हुई है, जिससे दोनों को आर्थिक लाभ मिला है।

उत्तर – भारत की 'लुक ईस्ट' (1991) और 'एक्ट ईस्ट' (2014) नीतियों तथा 'आसियान-भारत मुक्त व्यापार क्षेत्र व्यवस्था' (2010) ने आसियान के साथ भारत के व्यापारिक संबंधों को मज़बूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उदाहरण 8. माओ के नेतृत्व में 1949 की क्रांति के बाद चीन की अर्थव्यवस्था किस मॉडल पर आधारित थी और उसकी शुरुआती चुनौतियाँ क्या थीं?

› पहला कदम: चीन में 1949 में साम्यवादी क्रांति हुई, जिसका नेतृत्व माओ ने किया।

› दूसरा कदम: इस क्रांति के बाद, चीन ने सोवियत संघ के मॉडल को अपनाया, जिसमें सब कुछ सरकार के नियंत्रण में था।

› तीसरा कदम: उन्होंने 'आर्थिक एकांतवास' की नीति अपनाई, यानी बाहरी दुनिया से व्यापार और संबंध कम कर दिए।

› चौथा कदम: इस कारण उन्हें धीमी आर्थिक वृद्धि और तकनीकी पिछड़ापन जैसी शुरुआती चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

उत्तर – 1949 की क्रांति के बाद चीन की अर्थव्यवस्था सोवियत मॉडल पर आधारित थी, जिसमें सरकार का पूर्ण नियंत्रण था। इसकी शुरुआती चुनौतियाँ धीमी आर्थिक वृद्धि और तकनीकी पिछड़ापन थीं क्योंकि उसने खुद को 'आर्थिक एकांतवास' में रखा था।

उदाहरण 9. देंग श्याओपेंग की 'खुले द्वार की नीति' का चीन की अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा, विस्तार से समझाइए।

› सबसे पहले, यह नीति 1978 में देंग श्याओपेंग द्वारा शुरू की गई थी, जिसने चीन को आर्थिक रूप से विश्व के लिए खोल दिया।

› इस नीति के तहत, चरणबद्ध तरीके से आर्थिक सुधार किए गए। इसमें उद्योगों और कृषि का निजीकरण शामिल था, यानी सरकार का नियंत्रण कम करके निजी कंपनियों और किसानों को ज़्यादा आज़ादी दी गई।

› इसके साथ ही, चीन में 'विशेष आर्थिक क्षेत्र' (Special Economic Zones - SEZ) बनाए गए। ये ऐसे इलाके थे जहाँ विदेशी कंपनियाँ आसानी से निवेश कर सकती थीं और उन्हें कई तरह की टैक्स छूट मिलती थी।

› इन सुधारों के कारण चीन में विदेशी निवेश (foreign investment) तेज़ी से बढ़ा, जिससे नए उद्योग लगे और रोज़गार के अवसर पैदा हुए।

› परिणामस्वरूप, चीन की अर्थव्यवस्था में अभूतपूर्व वृद्धि हुई, उसकी GDP (सकल घरेलू उत्पाद) कई गुना बढ़ गई और वह विश्व की एक प्रमुख आर्थिक शक्ति बन गया।

उत्तर – खुले द्वार की नीति और चरणबद्ध आर्थिक सुधारों ने चीन की अर्थव्यवस्था को विश्व के लिए खोला, विदेशी निवेश आकर्षित किया, और उसे तीव्र आर्थिक वृद्धि के साथ एक वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप में उभारा।

उदाहरण 10. चीन के आर्थिक उत्थान से उत्पन्न किन्हीं तीन सकारात्मक और किन्हीं दो नकारात्मक प्रभावों का वर्णन करें।

› सबसे पहले, सकारात्मक प्रभावों को सूचीबद्ध करें। चीन ने 'खुले द्वार की नीति' अपनाई, जिससे विदेशी निवेश को बढ़ावा मिला।

› दूसरा सकारात्मक प्रभाव, उसका विदेशी व्यापार में भारी वृद्धि होना था, जिससे वह 'विश्व की फैक्ट्री' बन गया।

› तीसरा, कृषि और ग्रामीण उद्योगों का निजीकरण हुआ, जिससे ग्रामीण आय और उत्पादन में काफी बढ़ोतरी हुई।

› अब नकारात्मक प्रभावों पर आते हैं। इन सुधारों के कारण चीन में बेरोजगारी बढ़ी, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ पुरानी सरकारी कंपनियाँ बंद हुईं।

› दूसरा महत्वपूर्ण नकारात्मक प्रभाव, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच, तथा तटीय और भीतरी इलाकों के बीच आय असमानता का बढ़ना था, जिससे कुछ लोग बहुत अमीर हुए और कुछ पीछे छूट गए।

उत्तर – चीन के आर्थिक उत्थान के सकारात्मक प्रभाव: विदेशी निवेश में वृद्धि, व्यापार में जबरदस्त बढ़ोतरी, ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकास। नकारात्मक प्रभाव: बढ़ती बेरोजगारी, और आय की असमानता।

उदाहरण 11. भारत और चीन के संबंधों में 1962 के युद्ध के बाद क्या बदलाव आए और वर्तमान स्थिति क्या है?

› पहला चरण है, 1962 के युद्ध का तुरंत बाद का समय। युद्ध में भारत को हार मिली थी, और इसके बाद 1976 तक तो हमारे कूटनीतिक संबंध लगभग खत्म ही हो गए थे। दोनों देशों के बीच तनाव बहुत ज्यादा बढ़ गया था।

› दूसरा चरण आता है 1970 के दशक के आखिर और 1980 के दशक से। चीन में राजनीतिक नेतृत्व बदला, और उन्होंने व्यावहारिक मुद्दों पर ज़्यादा ध्यान देना शुरू किया। दिसंबर 1988 में हमारे प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने चीन का दौरा किया, जिससे संबंधों में सुधार की नई शुरुआत हुई। सीमा विवादों पर बातचीत शुरू हुई और सांस्कृतिक आदान-प्रदान और विज्ञान-तकनीक में सहयोग के समझौते हुए।

› तीसरा और वर्तमान चरण शीत युद्ध की समाप्ति के बाद का है। इस समय से भारत-चीन संबंधों में और तेजी से

बदलाव आया। व्यापार बहुत बढ़ा – 1999 से 30% सालाना की दर से बढ़ा। 1992 में जो व्यापार $338 मिलियन था, वो 2017 में $84 बिलियन हो गया। दोनों देश कई वैश्विक मंचों पर सहयोग करते हैं, जैसे WTO में।

› लेकिन, वर्तमान में कुछ चुनौतियाँ भी हैं। सीमा पर फिर से तनाव, चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC), और संयुक्त राष्ट्र में आतंकवाद के मुद्दे पर चीन का पाकिस्तान को समर्थन, ये सब कुछ ऐसे कारण हैं जिनसे संबंधों में गिरावट भी आई है।

उत्तर – 1962 के युद्ध के बाद, भारत-चीन के संबंध पहले तनावपूर्ण रहे और कूटनीतिक रिश्ते भी लगभग खत्म हो गए। 1980 के दशक से संबंधों में धीरे-धीरे सुधार आया, और शीत युद्ध के बाद तो व्यापार और सहयोग में बहुत वृद्धि हुई। हालांकि, वर्तमान में व्यापारिक संबंध मज़बूत हैं, पर सीमा विवाद और कुछ रणनीतिक मुद्दों पर तनाव बना हुआ है।

उदाहरण 12. जापान की आर्थिक सफलता के पीछे मुख्य कारण क्या हैं?

› पहला कारण है, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिकी मदद और संरक्षण।

› दूसरा, उन्होंने अपनी पूरी ऊर्जा आर्थिक विकास पर लगाई, क्योंकि उनके पास अपनी सेना बहुत छोटी है और रक्षा खर्च कम है।

› तीसरा, जापानी लोगों की मेहनत, अनुशासन और नई तकनीक को अपनाने की क्षमता।

› चौथा, उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों का उत्पादन और विश्व बाज़ार में उनकी लोकप्रियता।

उत्तर – जापान ने अमेरिकी मदद, कम रक्षा खर्च, अपनी मेहनतकश जनता और उन्नत प्रौद्योगिकी के बल पर तेज़ी से आर्थिक विकास किया।

उदाहरण 13. दक्षिण कोरिया की अर्थव्यवस्था को किस अवधि में 'हान नदी पर चमत्कार' के नाम से जाना जाता है और क्यों?

› पहले प्रश्न के दो हिस्से पहचानो: 'किस अवधि में' और 'क्यों'?

› दक्षिण कोरिया ने 1960 के दशक से 1980 के दशक के बीच बहुत तेज़ी से आर्थिक विकास किया।

› इस तीव्र आर्थिक विकास को 'हान नदी पर चमत्कार' कहा गया।

› यह इसलिए कहा गया क्योंकि इसकी राजधानी सियोल 'हान नदी' के किनारे बसी है और इस अवधि में देश की अर्थव्यवस्था में इतनी तेज़ी से सुधार हुआ कि यह किसी चमत्कार से कम नहीं था, जहाँ देश ने गरीबी से निकलकर समृद्धि हासिल की।

उत्तर – दक्षिण कोरिया की अर्थव्यवस्था को 1960 के दशक से 1980 के दशक के बीच 'हान नदी पर चमत्कार' के नाम से जाना जाता है, क्योंकि इस दौरान देश ने बहुत तेज़ी से आर्थिक वृद्धि की और गरीबी से निकलकर एक विकसित अर्थव्यवस्था बन गया, ठीक जैसे कोई चमत्कार हो गया हो, और यह विकास इसकी राजधानी सियोल (जो हान नदी के किनारे है) के इर्द-गिर्द केंद्रित था।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। वैकल्पिक शक्ति केंद्रों के नाम, उनके बनने के कारण और विश्व राजनीति में उनकी भूमिका पर सीधे सवाल आते हैं।

• बोर्ड परीक्षा में यूरोपीय संघ के गठन के ऐतिहासिक चरणों और इसकी विशेषताओं (जैसे साझा मुद्रा, झंडा, गान) पर सीधे सवाल आ सकते हैं, खासकर मास्ट्रिस्ट संधि का उल्लेख करना ज़रूरी है.

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यूरोपीय संघ की आर्थिक और कूटनीतिक विशेषताओं पर अक्सर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं, खासकर यूरो मुद्रा और व्यापारिक संबंधों पर। इराक युद्ध का उदाहरण भी ध्यान रखना, यह इसके अंदरूनी मतभेदों को दर्शाता है।

• इन पड़ावों के साल और उनके मुख्य समझौते (जैसे पेरिस संधि, रोम संधि, मास्ट्रिस्ट संधि) को अच्छे से याद कर लेना, ये बोर्ड परीक्षा में सीधे-सीधे पूछे जाते हैं!

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर आसियान की स्थापना के कारण, उसके सदस्य देश और उसके मुख्य उद्देश्यों पर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं।

• भारत की 'लुक ईस्ट' और 'एक्ट ईस्ट' नीतियों तथा आसियान-भारत मुक्त व्यापार समझौते (FTA) पर अक्सर बोर्ड परीक्षाओं में सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं, इसलिए इनके वर्ष और उद्देश्य याद रखें।

• यह भाग बोर्ड परीक्षाओं में चीन के उदय के कारणों और उसके शुरुआती आर्थिक मॉडल पर आधारित सीधे प्रश्न पूछने के लिए महत्वपूर्ण है। नीतियों के बदलाव पर भी प्रश्न आते हैं।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'खुले द्वार की नीति' के मुख्य बिंदुओं और उसके प्रभावों को अच्छी तरह से समझकर जाना.

• इस विषय पर आपको सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों को संतुलित तरीके से लिखना होगा। यह प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षा में सीधे-सीधे पूछा जाता है, तो इसके हर पहलू को अच्छे से तैयार कर लेना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। भारत-चीन संबंधों के विभिन्न चरणों (युद्ध से पहले, युद्ध के बाद, शीत युद्ध के बाद और वर्तमान स्थिति) को क्रम से याद रखना और हरेक चरण की विशेषताओं को समझना बहुत ज़रूरी है।

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। जापान के आर्थिक विकास के कारणों और वैकल्पिक शक्ति केंद्र के रूप में उसकी भूमिका पर अक्सर प्रश्न पूछे जाते हैं।

• दक्षिण कोरिया के 'हान नदी पर चमत्कार' और इसके उच्च मानव विकास के कारकों को याद रखना बहुत ज़रूरी है। यह बोर्ड परीक्षा में सीधा प्रश्न बनकर आ सकता है।

एक नज़र में रिवीज़न

› 1990s में दो-ध्रुवीय व्यवस्था के बाद, अमेरिका के प्रभुत्व को चुनौती देने वाले नए शक्ति केंद्र (यूरोपीय संघ, आसियान, चीन) उभरे।

› द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, आर्थिक सहयोग से यूरोपीय संघ का गठन (मास्ट्रिस्ट संधि).

› यूरोपीय संघ: आर्थिक, राजनैतिक, कूटनीतिक, सैन्य शक्ति; यूरो, साझा पहचान, पर सदस्य देशों में मतभेद।

› यूरोपीय संघ: 1951 (शुरुआत) 1957 (आर्थिक) 1992 (संघ गठन) विस्तार + यूरो।

› आसियान: 1967 में दक्षिण-पूर्व एशिया के 5 देशों द्वारा स्थापित, आर्थिक-सामाजिक विकास व शांति हेतु।

› आसियान की बढ़ती आर्थिक शक्ति, भारत की लुक/एक्ट ईस्ट नीति से संबंध मज़बूत।

› 1949 चीन: सोवियत मॉडल, आर्थिक एकांतवास, धीमी वृद्धि, तकनीकी चुनौती।

› देंग श्याओपेंग ने 1978 में 'खुले द्वार' नीति से चीन को वैश्विक आर्थिक शक्ति बनाया.

› चीन का आर्थिक उत्थान: विदेशी निवेश, व्यापार वृद्धि (सकारात्मक); बेरोजगारी, असमानता (नकारात्मक)।

› भारत-चीन संबंध: 1962 युद्ध, 1980 के बाद सुधार, व्यापार वृद्धि, पर सीमा विवाद जारी।

› जापान: द्वितीय विश्व युद्ध के बाद तीव्र आर्थिक वृद्धि, प्रौद्योगिकी में अग्रणी, शांतिवादी नीति।

› दक्षिण कोरिया: 'हान नदी पर चमत्कार', उच्च HDI, मजबूत निर्यात अर्थव्यवस्था।